भारत सरकार
इस्पात मंत्रालय

राज्य सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या 2394
08 अगस्त, 2025 को उत्तर के लिए

हरित इस्पात वर्गीकरण और उद्योग संरेखण

2394. डा. सुमेर सिंह सोलंकी:
श्रीमती संगीता यादवः

क्या इस्पात मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) मंत्रालय के हरित इस्पात वर्गीकरण के प्रमुख उद्देश्य क्या हैं और यह किस प्रकार निम्न-कार्बन इस्पात उत्पादन के लिए एक मानक स्थापित करता है;

(ख) इस अग्रणी रूपरेखा को हितधारकों द्वारा इस्पात क्षेत्र में सतत निवेश के लिए एक प्रेरक के रूप में किस प्रकार स्वीकार किया गया है;

(ग) भारत में अग्रणी उत्पादकों ने वर्गीकरण के उत्सर्जन मानदंडों को पूरा करने के लिए अपनी प्रक्रियाओं और प्रौद्योगिकियों को किस प्रकार संरेखित किया है; और

(घ) वे प्रारंभिक उपलब्धियाँ या संकेतक क्या हैं जो कार्बन तीव्रता में कमी और वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता में वृद्धि के वर्गीकरण के लक्ष्यों की दिशा में प्रगति को प्रदर्शित करते हैं?

उत्तर

इस्पात मंत्री (श्री एच. डी. कुमारास्वामी)

(क) से (घ): हरित इस्पात वर्गीकरण का उद्देश्य 'हरित इस्पात' को परिभाषित करना और ऊर्जा-दक्ष प्रौद्योगिकी तथा गैर-जीवाश्म ईंधन जैसे नवीकरणीय ऊर्जा आदि को अपनाकर इस्पात उद्योगों को हरित इस्पात का उत्पादन करने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु एक रूपरेखा तैयार करना है। विभिन्न हितधारकों के साथ परामर्श और विचार-विमर्श के कई दौर के बाद इसे अंतिम रूप दिया गया था। हरित इस्पात प्रमाणपत्र उन संयंत्रों को जारी किए जाएँगे जो आवेदन करेंगे और हरित इस्पात वर्गीकरण के अनुसार उत्सर्जन तीव्रता स्तर को पूरा करेंगे। नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ सेकेण्डरी स्टील टेक्नोलॉजी (एनआईएसएसटी), इस्पात मंत्रालय के तहत एक प्रशिक्षण संस्थान है जो मापन, रिपोर्टिंग और सत्यापन (एमआरवी) के साथ-साथ इस्पात के लिए हरित इस्पात प्रमाणपत्र और स्टार रेटिंग जारी करने वाली नोडल एजेंसी है। अब तक, 42 लौह एवं इस्पात उत्पादकों ने हरित इस्पात प्रमाणपत्र के लिए आवेदन किया है।

******